The Banyan Tree Journal
(An Open Access Peer-reviewed Multidisciplinary Journal)
ISSN:
No. 1, June 2025 : 73-77

वेदों का भारतीय ज्ञान परंपरा पर प्रभाव का समाशास्त्रीय विश्लेषण

प्रो. हिमांशु शेखर झा *
डॉ. सन्तेश्वर कुमार मिश्र **

सारांश

प्राचीन भारत की प्राचीन संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत का दुनिया भर की संस्कृतियों पर निरंतर प्रभाव रहा है। गणित और चिकित्सा से लेकर दर्शन और कला तक, प्राचीन भारतीय ज्ञान और इतिहास ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। अहिंसा, आत्म-साक्षात्कार, कर्म और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों ने वैश्विक स्तर पर शांति और सामाजिक न्याय के लिए आंदोलनों को प्रेरित किया है और योग और ध्यान के अभ्यास ने स्वास्थ्य और कल्याण की धारणा को बदल दिया है। भारतीय संस्कृति और मूल्य प्रणाली का प्रभाव दुनिया भर की संस्कृतियों में शांति, करुणा और सहिष्णुता की नैतिकता और नैतिकता में दिखाई देता है, जो अन्यथा संघर्षशील दुनिया में आशावाद को रोशन करता है।

यह शोधपत्र मानव सभ्यता के लगभग हर पहलू को शामिल करते हुए भारत की अमूल्य ज्ञान प्रणाली पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। यह शोधपत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है और इसका उद्देश्य भारत और दुनिया भर के लोगों को दुनिया पर भारत के व्यापक प्रभाव के बारे में एक नया और प्रबुद्ध –दृष्टिकोण रखने में मदद करना है।

कीवर्ड- भारतीय ज्ञान प्रणाली; विरासत; योगदान; प्रभाव; क्रॉस-कल्चर; वैश्विक।

परिचय

हम प्राचीन भारतीयों के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने हमें गिनती करना सिखाया।
जिसके बिना अधिकांश आधुनिक वैज्ञानिक खोजें असंभव होतीं"

-अल्बर्ट आइंस्टीन

भारत में बौद्धिक प्रश्न पूछने की एक पुरानी परंपरा है और एक शाब्दिक विरासत है जो कई सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। भारत प्राचीन और मध्यकालीन समय के दौरान ज्ञान परंपराओं और प्रथाओं में शानदार रूप से उन्नत था और इसे हमेशा 'ज्ञान और सांस्कृतिक पूंजी' पर आधारित समाज के रूप में स्वीकार किया गया है। समझ और धारणा की बौद्धिक और विद्वत्तापूर्ण उपलब्धियाँ वेदों और उपनिषदों से लेकर शास्त्रों, दार्शनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और कलात्मक स्रोतों की भरमार तक फैले प्राचीन भारतीय ग्रंथों में सीखने के विविध क्षेत्रों में व्यापक विचारों का निर्माण करती हैं। संस्कृत मूल श्विदश् जिसका अर्थ है श्जाननाश्, से व्युत्पन्न होने के कारण वेदों को "श्रुति"- "जो सुना जाता है" के रूप में जाना जाता है, जिसे भारतीय ज्ञान प्रणाली या भारतीय ज्ञान परंपरा (IKT) की संरचना के आधार के रूप में माना जाता है, जिसे प्राचीन हिंदू बौद्धिक परंपरा के रूप में भी जाना जाता है। हिंदू पारंपरिक विश्वास के अनुसार, हिंदू ऋषियों ने कुछ स्वगÊय कथनों से

* राज्य आयुक्त दिव्यांगजन, उ.प्र. सरकार, पूर्व कुलपति एवं संस्थापक अध्यक्ष, समाशास्त्र विभाग, शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ
** विभागाध्यक्ष, समाशास्त्र विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) Email- santeshwarmishra@gmail.com

वैदिक भजनों और मंत्रों को सुना और सुनाया। ये "भजन वास्तव में "ऋषियों" द्वारा रचित नहीं थे, बल्कि उन्हें किसी अन्य दुनिया में सुना/देखा गया और फिर उन्हें व्यक्त किया गया- भजन हमेशा हमारे परिवर्तन की सामान्य दुनिया से परे अपरिवर्तित थे और हैं" (कज़ानस, 2007)। इसलिए वैदिक भजनों और मंत्रों को वैदिक शास्त्रों में "नित्य और "अपौरुषेय" (सतही और मनुष्यों का उत्पाद नहीं) के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। भारतीय सभ्यता ने ज्ञान को बहुत महत्व दिया है, जैसा कि इसके अविवसनीय रूप से विशाल मात्रा में विद्वानों के ग्रंथों, दुनिया में पांडुलिपियों के व्यापक वर्गीकरण और विषय क्षेत्रों के समूह में लिखित कार्य, दार्शनिकों और शिक्षण संस्थानों के अपने सुप्रसिद्ध भंडार से परिलक्षित होता है। भारत की ज्ञान परंपरा वेदों (उपनिषदों) से लेकर श्री अरबिंदो जैसे ऋषियों तक ज्ञान के साथ सभी शोधों के केंद्र में रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का भारतीय संस्कृति, दर्शन और आध्यात्मिकता पर गहरा प्रभाव है और हजारों वर्षों में इसका कायापलट हुआ है। आयुर्वेद, योग, वेदांत और वैदिक विज्ञानों से युक्त ये ज्ञान प्रणालियाँ आज भी समकालीन दुनिया में कई मायनों में प्रासंगिक हैं (शर्मा, 2005)।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई के एस) को समझना

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस), एक परंपरा और जीवन पद्धति होने के अलावा, एक संगठित प्रणाली के माध्यम से ज्ञान संचरण की एक गतिशील प्रक्रिया को शामिल करती है। यह विचारों, विष्वासों, टिप्पणियों, तकनीकों और विधियों का एक वैचारिक रूप से तैयार किया गया समूह है जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को व्यवस्थित रूप से सौंपा गया है। इस संरचित और मानकीकृत प्रणाली का आधार वेद, उपवेद, उपनिषद, स्मृति और पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों में है, जो कई सभ्यताओं और संस्कृतियों की प्रमुख विशेषताओं को दर्ज करते हैं और समय के साथ अनुभवों और संचार के आधार पर हासिल किए गए हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में दर्शन, धर्म, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, ज्योतिष और साहित्य जैसे विभिन्न विषय शामिल हैं, जो दोहराए जाने वाले तकनीकों और विधियों के संग्रह से समृद्ध हैं जो विकास, परिवर्तन और अनुकूलन के साथ-साथ विस्तार की अनुमति देते हैं। इसमें प्राचीन भारत का ज्ञान, उपलब्धियां और चुनौतियां, साथ ही पारिस्थितिकी, स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन के अन्य पहलुओं के क्षेत्र में भारत के इच्छित लक्ष्यों की समझ शामिल है। इसके अलावा, यह ध्यान, योग, निरंतर सीखने और जीवन भर ज्ञान और बुद्धि की खोज के तरीकों के माध्यम से आत्म-खोज, पूर्ति और आंतरिक पुनर्गठन पर जोर देता है।

अन्य महत्वपूर्ण योगदान

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अन्य महत्वपूर्ण योगदानों में, उदाहरण के लिए, 6000 साल पहले सिंध नदी में पैदा हुई नौवहन की कला शामिल है। नौवहन शब्द संस्कृत के शब्द "नवगति" से लिया गया है। नौसेना शब्द भी संस्कृत के "नौ" से लिया गया है। दूसरे, जेमोलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ अमेरिका के अनुसार 1896 तक भारत दुनिया के लिए हीरे का एकमात्र स्रोत था। सिंचाई के लिए सबसे पहला जलाशय और बांध चंद्रगुप्त मौर्य के समय में सौराष्ट्र में बनाया गया था। भारतीय वस्त्र प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रहे हैं। यूनानियों और रोमनों ने भारत से उच्च गुणवत्ता वाले वस्त्रों का व्यापक आयात दर्ज किया, जिन्हें उन दिनों प्रतिष्ठित वस्तुएँ माना जाता था। यूरोप की औद्योगिक क्रांति शुरू करने के लिए इंग्लैंड द्वारा सफलतापूर्वक निर्मित की जाने वाली पहली वस्तुओं में से एक वस्त्र था, और प्रौद्योगिकी, डिजाइन और यहाँ तक कि कच्चा कपास भी भारत से आयात किया गया था, जबकि समानांतर रूप से, भारत की स्वदेशी कपड़ा मिलों को अंग्रेजों ने गैरकानूनी घोषित कर

दिया था। (स्टील के साथ-साथ वस्त्र भी औद्योगिक क्रांति का मुख्य आधार थे - दोनों की उत्पत्ति भारत में हुई थी।) अहमदाबाद वस्त्र संग्रहालय विद्वत्तापूर्ण सामग्री के लिए एक बेहतरीन संसाधन है जिसे व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित और प्रस्तुत करने की आवश्यकता है (मल्होत्रा और पटेल, 2003)।

बहुत कम लोग जानते हैं कि कान्हा नामक एक भारतीय नौसैनिक पायलट को वास्को डी गामा ने भारत ले जाने के लिए काम पर रखा था। यूरोपीय चित्रणों के विपरीत कि भारतीय केवल तटीय नेविगेशन जानते थे, भारत में गहरे समुद्र में शिपिंग मौजूद थी। लगभग 2,000 साल पहले भारतीय जहाज अंडमान, लक्षद्वीप और मालदीव जैसे द्वीपों पर जाते थे। कौटिल्य के शास्त्रों में समुद्री यात्रा के लिए अच्छे और बुरे समय का वर्णन किया गया है। मध्यकाल में, अरब नाविक भारत में अपनी नावें खरीदते थे। पुर्तगालियों ने भी अपनी नावें भारत से ही प्राप्त करना जारी रखा, न कि यूरोप से। जहाज निर्माण और निर्यात एक प्रमुख भारतीय उद्योग था, जब तक कि अंग्रेजों ने इसे प्रतिबंधित नहीं कर दिया। ग्रीक, रोमन और दक्षिण पूर्व एशियाई स्रोतों में हिंद महासागर के व्यापार पर व्यापक अभिलेखीय सामग्री मौजूद है। अब यह स्वीकार किया जाता है कि पश्चिमी मानदंड एकमात्र बेंचमार्क नहीं हैं जिसके द्वारा अन्य ज्ञान प्रणालियों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। जबकि "पारंपरिक" शब्द का अर्थ अक्सर "आदिम" या "पुराना" होता है, कई पारंपरिक विज्ञान और प्रौद्योगिकियां वर्तमान समय के मानकों से भी काफी उन्नत थीं और अपने "आधुनिक" विकल्पों की तुलना में अद्वितीय स्थानीय स्थितियों और जरूरतों के लिए बेहतर अनुकूलित थीं। अल-बरूनी और विभिन्न देशों के अन्य आगंतुकों ने सदियों पहले लिखा था कि भारतीय मध्य पूर्व, चीन, जापान और एशिया के अन्य हिस्सों में अग्रणी चिकित्सकों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों में से थे। उन्होंने कई देशों में प्रतिष्ठा और उच्च ख्याति का आनंद लिया, जैसा कि उनके साथ किए जाने वाले व्यवहार से स्पष्ट होता है।

भारतीयों ने कई सहस्राब्दियों तक गणित, धातु विज्ञान, कृषि, चिकित्सा, शिपिंग और व्यापार, कला, भाषा, संस्कृति, संगीत और कई अन्य चीजों का प्रसार किया। पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया पर इस भारतीय प्रभाव को आज उन समाजों द्वारा स्वीकार किया जाता है और उनके लेखन में इसका अच्छी तरह से उल्लेख किया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में विभिन्न विचारधाराओं से संबंधित कई विचारक शामिल हैं जो अक्सर आपस में दार्शनिक वाद-विवाद में लगे रहते हैं। उदाहरण के लिए, न्याय यथार्थवाद हमेशा (लगभग 12 शताब्दियों तक) ज्ञानमीमांसा और सत्ता-मीमांसा दोनों स्तरों पर बौद्ध घटनावाद के साथ संघर्ष में रहा। "भारतीय विचारक ज्ञान के सभी क्षेत्रों से जानकारी प्राप्त करने में संकोच नहीं करते थे ताकि "ज्ञात" की विशेषता वाले मॉडल का निर्माण किया जा सके जो मूल रूप से दुनिया का निर्माण करते हैं" (कपूर, 2005)। प्ज़ै एक वैचारिक अंत:विषय ढांचे पर काम करता था। इस तरह के ढांचे के अस्तित्व ने विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के लिए ज्ञानमीमांसा सामंजस्य की स्थिति में जाना संभव बना दिया। इस ढांचे ने विभिन्न विचारधाराओं के बीच विस्तृत बहस को भी संभव बनाया। जैसा कि कपूर कहते हैं, "यह इन सिद्धांतों और उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता की मौन स्वीकृति और पालन है जिसने अलग-अलग अ◌ॉन्टोलॉजी वाले प्रतिस्पर्धा स्कूलों के उद्भव और विकास की अनुमति दी, जिनके विवादों ने ज्ञान के स्रोतों के विज्ञान को अस्तित्व में लाया" (ibid.)।

अब यह स्वीकार किया जाता है कि पश्चिमी मानदंड एकमात्र बेंचमार्क नहीं हैं जिसके द्वारा अन्य ज्ञान प्रणालियों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। जबकि "पारंपरिक" शब्द का अर्थ अक्सर "आदिम" या "पुराना"होता है, कई पारंपरिक विज्ञान और प्रौद्योगिकियाँ वर्तमान समय के मानकों से भी काफी उन्नत और अपने "आधुनिक" विकल्पों की तुलना में अद्वितीय स्थानीय परिस्थितियों और आवश्यकताओं के लिए बेहतर रूप से अनुकूलित थीं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति एनईपी 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली द्वारा समर्थित भारत के शिक्षा क्षेत्र में एक स्मारकीय क्रांति की कल्पना करती है। भारत के पास ज्ञान का अपार भंडार है, जिसकी कई पांडुलिपियों का अभी भी पता लगाया जाना बाकी है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जिसे 14 विद्या और 64 कलाओं के रूप में वर्णित किया गया है, में दर्शन, व्यावहारिक शिक्षा, कला, कौशल, शिल्प कौशल, कृषि, स्वास्थ्य और विज्ञान शामिल हैं। इन परंपराओं का अध्ययन, अनुकूलन और आधुनिक जीवन में एकीकरण किया जाएगा, जिससे हर क्षेत्र में परिवर्तनकारी बदलाव आएंगे। भारतीय ज्ञान प्रणाली के कार्यान्वयन से न केवल शिक्षा में क्रांति आएगी बल्कि भारतीय मानस और जीवन शैली का भी कायाकल्प होगा। मौलिक भारतीय विचार, ज्ञान, परंपरा, कला, कौशल, शिल्प कौशल और प्रबंधन को विभिन्न क्षेत्रों में शामिल करके, भारत एक गहन परिवर्तन से गुजरेगा। आने वाले दशकों में भारतीय ज्ञान प्रणाली क्षेत्र में 5 मिलियन से अधिक नौकरियों के सृजन की उम्मीद है, जिससे भारत का आत्म-सम्मान और स्वाभिमान बढ़ेगा। भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से खुद को पुनर्जीवित करने की भारत की यात्रा देश में महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए तैयार है। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान परंपराओं को अपनाकर, भारत ब्रिटिश शासन की विरासत को दूर कर सकता है और एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में अपना सही स्थान हासिल कर सकता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली द्वारा निर्देशित शिक्षा क्षेत्र का परिवर्तन इस पुनरुद्धार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जिससे मानसिक स्वतंत्रता और बौद्धिक सशक्तीकरण का एक नया युग शुरू होगा। जैसे-जैसे भारत आगे बढ़ेगा, इसका प्राचीन ज्ञान व्यावहारिक अनुप्रयोग पाएगा, जिससे न केवल इसके नागरिक बल्कि वैश्विक समुदाय भी लाभान्वित होंगे।

निष्कर्ष

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मानव जाति की जीवनशैली को बेहतर बनाने में इस योगदान ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। यह योगदान गणित के क्षेत्र में, चिकित्सा के सूत्रों में, जीवंत कला में, साहित्य में और भी बहुत कुछ में दिखाई देता है। आज की दुनिया का आधुनिक आधार पारंपरिक भारत के प्राचीन विचारों पर बना है। विचार पुराने हैं लेकिन संदेश नवीन अपील से भरे हुए हैं। भारत ने दुनिया की बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दुनिया में सबसे प्रसिद्ध दर्शनों में से एक उपनिषदों का सिद्धांत है। उपनिषदों को जीवन के संपूर्ण दर्शन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह मानव मन के काम का उत्कृष्ट रूप है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली एक स्तर पर पूरे ब्रह्मांड में सभी अस्तित्व की एकता की धारणा को दूसरे स्तर पर सापेक्षवाद और सत्यवाद के साथ जोड़ता है। इस विश्वदृष्टि से लैस, भारतीय ज्ञान प्रणाली "या तो/या या दोनों" तर्क का उपयोग करता है। इसकी तुलना प्रमुख परमाणुवादी विष्व–ष्टि से करें जो केवल "या तो/या" तर्क का उपयोग करती है। ऐसा लगता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में सामान्य जोर एक या दूसरे को सरसरी तौर पर खारिज करने और नकारने के बजाय विचारों की बहुलता पर है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के तहत, भारत में भारतीय ज्ञान प्रणाली के साथ-साथ ऐसी प्रणालियों के भीतर अभ्यास करने वालों को हाशिए पर रखा गया, दबाया गया और उनका उपहास किया गया। इसका भारत की अर्थव्यवस्था और समाज के विकास पर गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप इसके अधिकांश लोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में विकृति आई। भारत की ज्ञान प्रणालियों में भारतीय दृष्टिकोणों को एकीकृत करना और उनका जश्न मनाना केवल निवारण का विषय नहीं है। यह नए शोध प्रतिमान और मानसिक मानचित्र बनाने में

मदद कर सकता है, साथ ही मौजूदा लोगों को समृद्ध भी कर सकता है। वैष्विक क्षेत्र में भारत के बड़े पैमाने पर फिर से प्रवेश के साथ, प्ज्ञै के प्रबंधन के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों हैं। वैष्वीकरण के सांस्कृतिक निहितार्थ वैश्विक गाँव में एक समरूप विश्वव्यापी संस्कृति बनाने के लिए विभिन्न विचारों और मूल्यों के मिश्रण और अक्सर उन्हें लागू करने से संबंधित हैं। इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण तौर-तरीके आर्थिक संपर्क, जनसंचार माध्यम और आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी मंचों के अन्य पहलू हैं, जो, उदाहरण के लिए, खाने, गाने, नाचने, बोलने, लिखने आदि में व्यक्त ऐसी समरूप सांस्कृतिक प्रथाओं की स्थापना में तेजी लाते हैं, जो वैष्विक गांव के समरूपीकरण का निर्माण करते हैं। बदलती विश्व व्यवस्था और वैश्विक शक्ति परिवर्तन इसे और भी जटिल बनाते हैं, इसलिए, भारत को टेक्टोनिक शक्ति परिवर्तनों को समझने और इसका नेतृत्व करने और इसे नेविगेट करने का अपना तरीका खोजने के लिए अपनी भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं से संकेत लेने की आवश्यकता है। भारत अपनी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और बौद्धिक विरासत का प्रभावी उपयोग करके यह स्थान प्राप्त कर सकता है। एक देश के रूप में भारत को अत्यंत समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास का आशीर्वाद प्राप्त है। विश्व शक्ति बनने के लिए, भारत को अपने देश की पेशकश का अधिकतम लाभ उठाना चाहिए। हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उसी का प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रौद्योगिकी जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, आवश्यक है। निस्संदेह, भारत की कथा दुनिया में विभिन्न विकासों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

संदर्भ ग्रन्थ

बाजपेयी, शिवा (2011), *भारत का इतिहास - प्राचीन से आधुनिक काल तक 24 जून 2019 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत,* (हिमालयन अकादमी प्रकाशन (हवाई, यूएसए), आईएसबीएन 978-1-934145-38-8।

बरो, थॉमस (2001), *संस्कृत भाषा* मोतीलाल, आईएसबीएन 978-81-208-1767-8।

चक्रवतÊ, सीतांसु (1991)। *हिंदू धर्म, जीवन का एक तरीका,* मोतीलाल बनारसीदास पब्ल। पी। 71। आईएसबीएन 978-81-208-0899-7। 25 फरवरी 2024 को पुन:प्राप्त।

विज्ञान में भारतीय योगदान, 2018. विज्ञान भारती। नई दिल्ली।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (2023), *विषयगत सत्र,* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। 25/09/24 को पुन:प्राप्त, उपलब्ध-
https:@@www-education-gov.
in@nep@indian&knowledge&systems

कपूर, कपिल और सिंह, अवधेश के. (2005). *"भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ",* खंड 1. भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला। आईएसबीएन 8124603367, 9788124603369।

कज़ानस एन. (2007), *'ग्रीक लोगो, वैदिक वाक्य- रचनात्मक शक्ति'* डॉ. श्री कुमार द्वारा संपादित, संस्कृत पार संस्कृतियों में संस्कृत अध्ययन के लिए विशेष केंद्र, जेएनयू, नई दिल्ली, प्रिंटवल्ड।

मल्होत्रा, राजीव और पटेल, जय. (2003), *"भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी का इतिहास",* डी. पी. अग्रवाल (संपादक), "भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी का इतिहास श्रृंखला" में। इन्फिनिटी फाउंडेशन प्रोजेक्ट। 25/09/24
http:@@www-indianscience-org@indeÛ-html

रमन, वरदराज वी. (2012), *"हिंदू धर्म और विज्ञानरू कुछ विचार"।* ज़ीगॉन। 47 (3)- 549-574। डोई- 10.1111/र.1467-9744.2012.01274.Û.

शर्मा, राम शरण (2005), *भारत का प्राचीन अतीत,* (अॉक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, प्ैठछ 978-019-568785-9)।

हिंदू धर्म का सचित्र विÜवकोश- ए-एम, जेम्स जी. लोचटेफ़ेल्ड (2001), प्ैठछ 9780-8239-3179-8,

भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ
https:@@www-sanskritimagazine
com@india@traditional&knowledge&systems&of&india@